२०२. कथा पुरानी है

कथा पुरानी है रीत भी वही पुरानी है ॥धृ.॥

बिभीषणको तो दे दी लंका, बजा रामका जगमे डंका
हनुमानको तेल मिला यह, प्रभु मनमानी है ॥१॥

राधा पाई विरह व्यथाही, कुबजा पी गयी पीडा सबही
भामा रुक्मिणी संगको पायी, अजब कहानी है ॥२॥

तुलसी मीरा कबीर सुरकी, कोऊ न जाने विपदा मनकी
व्यथा सही पर प्रभू ना छोडा, प्रीत निभायी है ॥३॥

मांगो उसको कुछ नही देता, बिन मांगे कोई सबकुछ पाता
मधुसूदन सुनलो कहते है, मेहेर दानी है ॥४॥

Scanned by CamScanner